10 - तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् - 1119

यह संज्ञा सूत्र है, जिसका अर्थ है तालव्य (तालु आदि स्थानों से उच्चरित होने वाले) आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न - ये दोनों जिन वर्णों के समान हों, वे सवर्णसंज्ञक होते हैं।

वार्तिक - ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम् - ऋ, लृ दोनों का उच्चारण स्थान भिन्न है फिर भी इनकी सवर्ण संज्ञा होती है।

(i) अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः - अ, कवर्ग (क, ख, ग, घ, ङ), हकार और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

(ii) इचुयशानां तालु — इ, चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ), य और श इनका उच्चारण स्थान तालु है।

(iv) ऋटुरषाणां मूर्धा - ऋ, टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण), रकार और ष का स्थान मूर्धा है।

v लृतुलसानां दन्ताः - लृ, तवर्ग (त, थ, द, ध, न), ल एवं स का उच्चारण स्थान दाँत हैं।

(vi) उपूपध्मानीयानामोष्ठौ - उ, पवर्ग (प, फ, ब, भ, म) और उपध्मानीय का स्थान ओठ है।

(vii) ञमङणनानां नासिका च - और ञ, म, ङ, ण एवं नकार उच्चारण स्थान नासिका भी है।

(viii) एदैतोः कण्ठतालु - एकार और ऐकार का स्थान कण्ठ और तालु है।

(ix) ओदौतोः कण्ठोष्ठम् - ओकार एवं औकार का स्थान कण्ठ और ओठ हैं।

(x) वकारस्य दन्तोष्ठम् - वकार का स्थान दन्त तथा ओठ हैं।

(xi) जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् - जिह्वामूलीय का स्थान जिह्वामूल में है।

(xii) नासिका अनुस्वारस्य – अनुस्वार का उच्चारण स्थान नासिका है।

यत्न दो प्रकार के हैं (a) बाह्य (b) आभ्यन्तर। वर्णों के उच्चारण में जो प्रयास करना पड़ता है, उसे यत्न कहते हैं। यह प्रयत्न मुख के बाहर और भीतर होने के कारण बाह्य और आभ्यन्तर दो प्रकार का है। आभ्यन्तर प्रयत्न की उपयोगिता सवर्ण संज्ञा में होती है किन्तु बाह्यप्रयत्न की आवश्यकता कई वर्णों की असमानता के कारण होता है।

आय प्रयत्न (आभ्यान्तर) पाँच प्रकार का होता है – (a) स्पृष्ट (b) ईषत् स्पृष्ट (c) ईषद्विवृत, (d) विवृत तथा संवृत

वर्णों के उच्चारण स्थल को जिह्वा का स्पर्श होना स्पृष्ट है।

वर्णों ... जिह्वा का थोड़ा स्पर्श ईषत्स्पृष्ट है।

वर्णों के ... समय मुख का खुला रहना विवृत है।

... मुख का थोड़ा खुला रहना ईषत् विवृत है

ह्रस्व का प्रयोग प्रयत्न-दशा में संवृत है किन्तु प्रक्रिया दशा में विवृत है।

बाह्य प्रयत्न के ग्यारह भेद हैं – विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, कादम आदि।

विवार – जिन वर्णों के उच्चारण के समय मुख खुला रहता है, उसे विवार कहते हैं।

संवार – जिन वर्णों के उच्चारण में मुख संकुचित या थोड़ा खुला रहता है।

श्वास – जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास चलता है उनका प्रयत्न श्वास है।

Contd,

Scanned with CamScanner